IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 27, Issue 5, Series 1 (May. 2022) 61-62
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

डॉ० अम्बेडकर का धर्मान्तरण एवं दलित उत्थान

अषोक कुमार (षोध छात्र)
मेवाडविष्वविद्यालय,चित्तौडगढ(राजस्थान)

(डॉ0 रणवीर सिह)
सहायक आचार्य इतिहास विभाग
हर्ष विद्या मन्दिर पी जी कालिज रायसी हरिद्वार उत्तराखण्ड

Date of Submission: 28-04-2022 Date of Acceptance: 10-05-2022

सामाजिक विषमता किसी भी सभ्य समाज का सबसे बड़ा कलंक होती है। ऐसा समाज कभी भी विकास नहीं कर सकता जहाँ कुछ व्यक्तियों व वर्गों के साथ अछूत जैसा व्यवहार किया जाये। भारत में एक लम्बे समय से वर्ण–व्यवस्था के अन्तर्गत प्रगणित चौथे वर्ण–शूद्रों (दलितों) के साथ अमानवीयता का व्यवहार किया जाता रहा है। दलितों का पेशा उच्च वर्ण के लोगों की सेवा मात्र करना रह गया था। उन्हें शिक्षा व धर्म दोनों से ही वंचित कर दिया गया था। कोई भी शूद्र अपना उपनयन संस्कार नहीं करा सकता था, और सवर्णों के साथ उन्हें मंदिरों में प्रवेश करने की इजाजत नहीं थी। यह विडम्बना तो काफी हद तक आज भी बनी हुई है कि कहीं–कहीं दलितों के मंदिर प्रवेश को लेकर प्रतिबंध लगा हुआ है। एक तरफ जहाँ संविधान में समता व स्वतन्त्रता की बात कही गयी है, तो वहीं दूसरी तरफ समाज में आज भी विषमता व्याप्त है।

उपरोक्त हिंदू रूढ़िवादी मानसिकता ने डॉ0 अम्बेडकर जैसे प्रबुद्ध विद्वान को जीवन भर छटपटाने के लिये विवश कर दिया। इन्हीं कारणों के चलते डॉ0 अम्बेडकर उग्र से उग्रतर होते चले गये, उन्होंने हिंदू धर्म की आत्मा–परमात्मा, अवतारवाद, भाग्यवाद, पुनर्जन्मवाद जैसी सभी परिकल्पनाओं का पुरजोर विरोध किया और बताया कि वर्णव्यवस्था और जातिवाद पर आधारित शोषण–तन्त्र के ये सभी उपकरण हैं। जब तक हम इनसे मुक्त नहीं होगें, तब तक हमारी परेशानियाँ दूर नहीं होगीं। उनका नारा था ''शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो।''

डॉ0 अम्बेडकर ने दलितों के उद्धार हेतु अथक प्रयास किये। हजारों साल की लादी गयी गुलामी के बाद इस देश के दलित समूह ने पहली बार मुक्ति का अनुभव किया जिसका नेतृत्व स्वयं बाबा साहेब ने संभाला। वर्ण व्यवस्था ने जिन्हें नकारा था, जाति–व्यवस्था ने जिन्हें ठुकराया था, दास्यत्व में जी रहे इस समाज को परिवर्तन के संघर्ष में अम्बेडकर जी ने उतारा। इस उपेक्षित और प्रताड़ित जनसमूह ने पहली बार अपनी अस्मिता व आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ी। अम्बेडकर जी एक ही समय में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक संघर्ष की लड़ाई लड़ रहे थे। उनका एक ही सपना था– ''समता, स्वतन्त्रता, बन्धुता और सामाजिक न्याय।''

डॉ0 अम्बेडकर के नेतृत्व में दलित चेतना का अभ्युदय स्वतन्त्रता के पूर्व ही हो गया था। स्वतन्त्रता संग्राम के समानान्तर डॉ0 अम्बेडकर ने स्वयं को दलित स्वतन्त्रता के लिये समर्पित किया। इसीलिये उन पर प्रायः स्वतन्त्रता संग्राम में भाग न लेने के आरोप लगते रहे। उन्होंने एक बार तल्ख होकर कहा भी था कि यदि लोकमान्य तिलक मेरी जगह होते तो वे ''स्वतन्त्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'',के स्थान पर ''अस्पृश्यता से मुक्ति मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'' कहते। अम्बेडकर व गाँधी में अछूत समस्या पर निरन्तर मतभेद रहा। अम्बेड़कर स्थितियों में आमूल–चूल परिवर्तन की बात कहते थे जो संभव नहीं हुआ और न जिसकी भविष्य में हिन्दू धर्म में सम्भावना थी। यहीं से अंबेड़कर का रुख हिंदू धर्म से विमुख हो बौद्ध धर्म की तरफ झुक गया। डॉ0 अम्बेडकर ने धर्मान्तरण को दलित समस्या के सामाजिक हल के रूप में प्रस्तुत किया। इसी से प्रेरणा लेकर समस्त भारत में दलितों ने बौद्ध धर्म को अपनाया व उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में दलितों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें सवर्णों के घरों एवं मंदिरों में घुसने का अधिकार नहीं है। मध्य प्रदेश के 80 प्रतिशत गांवों में दलित आज भी मंदिर में नहीं घुस सकते। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में तो आज भी दलितों की बारात सवर्णों के समान नहीं चढ़ सकती है। यदि उन्होंने ऐसा किया तो उन्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। राजनीतिक पार्टियाँ भी वोट बैंक के लिए दलित जातियों का इस्तेमाल करती हैं। हालांकि संविधान के समक्ष सभी को समान माना गया है, बावजूद इसके अनेकों ऐसी घटनाऐं सामने आ रही हैं, जब किसी दलित के बच्चे

को स्कूल में सवर्णों के साथ बैठने का अधिकार नहीं मिलता, उसे कक्षा में सबसे पीछे बैठाया जाता है। मिड–डे–मील वितरित होते समय दलित बच्चों को सबसे बाद में भोजन दिया जाता है और बाद में झाड़ू लगाने का काम भी उन्हें सौंपा जाता है। उपरोक्त काम से बच्चों के मन में दलित होने की हीनभावना पैदा होती है।

उपरोक्त विषमताओं के चलते ही आज समाज में दलितों के धर्मान्तरण की घटनाऐं दिन–प्रतिदिन बढ़ रही **हैं**। आज दलित कर्मकाण्ड व विषमता से भरे हिन्दू धर्म को छोड़ बौद्ध, सिख, ईसाई, जैन व इस्लाम की तरफ उन्मुख हो रहा है। दलितों को ऐसे धर्म की आवश्यकता है जो उन्हें समानता दिला सके।

डॉ0 अम्बेडकर निर्विवाद रूप से दलितों अथवा अनुसूचित जाति के मसीहा के रूप में प्रसिद्ध है। उन्होंने सदियों से दबी कुचली दलित जातियों की असीम व्यथा को समझा। वह उसे अन्तःस्थल तक अनुभव कर सके क्योंकि उसी समाज का सदस्य होने के नाते उन्होंने ये समस्त वेदनाऐं व अपमान स्वयं भी पग–पग पर झेले थे। उन्होंने दलित जातियों के उत्थान को अपने जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य बनाया। इस कार्य के लिए उन्होंने जनजागृति उत्पन्न करने के लिए 'मूकनायक' व 'बहिष्कृत भारत' दो पत्रों का प्रकाशन भी किया। दलित मुक्ति हेतु उन्होंने कई आन्दोलनों यथा– महाड़ अछूत आन्दोलन, महाड़ सत्याग्रह, मन्दिर प्रवेश आन्दोलन, महार वतन, चलाये किन्तु बाद में उन्होंने यह अनुभव किया कि दलितों के लिए राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक अधिकार व स्वतन्त्रता अधिक आवश्यक है। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि हिन्दू समाज व धर्म में दलितों के लिए सम्मानजनक स्थान व मानवीय व्यवहार की आशा करना व्यर्थ है। ऐसी स्थिति में उन्होंने समस्त धर्मों का अध्ययन करने के बाद मानवीय समानता पर आधारित बौद्ध धर्म को दलितों की समस्त समस्याओं के हल के रूप में प्रस्तुत किया।

इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने दलितों को धर्मान्तरण के लिए प्रेरित किया **तथा** बौद्ध धर्म को दलित समस्या के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया। इसलिए वर्षों से चली आ रही दुर्दशा व अस्पृश्यता के कारण दलित **जातियों का** बार–बार हिन्दू धर्म से **मोह** भंग हुआ है और धर्म परिवर्तन करके अपने प्रति समाज द्वारा किये जा रहे अमानवीय व्यवहार का अन्त करने के लिए दलितों ने बौद्ध धर्म के अलावा अन्य धर्मों को भी अंगीकृत किया है। उनके आहवान पर 5 लाख लोगों ने 1956 ई0 में डॉ0 अम्बेडकर के साथ नागपुर में धर्मान्तरण करके बौद्ध धर्म को अंगीकृत किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अकेला ए0आर0, मायावती और मीडिया प्रकाशन आनन्द साहित्य सदन, सिद्धार्थ मार्ग छावनी, अलीगढ़ द्वितीय संस्करण 2000
- भारत सरकार 1996 **भारतीय** शिक्षा आयोग, कोठारी कमीशन की रिपोर्ट, नई दिल्ली।
- भगवानदास, बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, एक परिचय एक संदेश, दलित लिबरेशन टुडे, प्रकाशन, लखनऊ, 1998
- डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, अछूत कौन और कैसे (अनुवादक मदन्त कोशिल्यापन) प्रकाशन अमिताभ पब्लिकेशन राजेन्द्र नगर, लखनऊ 1988
- हर्ष हरदान– डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, जीवन और दर्शन पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1995
- जिज्ञासु चन्द्रिका प्रसाद, बाबा साहब का उपदेश एवं आदेश, बहुजन कल्याण प्रकाशन गुरूद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली 2001
- नागर, विष्णुदत्त, डॉ0 कृष्ण वल्लभ नागर, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचार एवं नीतियां, प्रियंका प्रिण्टर्स, भोपाल 1995
- राम बाबू जगजीवन, भारत जातिवाद एवं हरिजन समस्या, राजपाल एवं सन्त प्रकाशन कश्मीरी गेट, दिल्ली 1996
- शर्मा रामशरण, प्रारम्भिक भारत का आर्थिक, सामाजिक इतिहास (शूद्रों का प्राचीन इतिहास) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1995
- सिंह आर0के0, कांशीराम और बी0एस0पी0– दलित आन्दोलन का वैचारिक आधार ब्राह्मणवाद विरोध, प्रकाशक कुशवाह बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, सर्वोदय नगर अल्लापुर, इलाहाबाद 1996
- शाही डॉ0 श्याम सिंह, बाबा साहब अम्बेडकर का सम्पूर्ण वाड्मय खण्ड–2, प्रकाशन, कल्याण मन्त्रालय भारत सरकार की ओर से प्रकाशित 1984
- सिंह उमराव, (सम्पादक) बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर सम्पूर्ण **वाड्ग्मय** खण्ड–1 3 अम्बेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली 1998
- सिंह आर0जी0, भारतीय दलितों की समस्याएं एवं समाधान, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ अकादमी मध्यप्रदेश 1986